REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी चेतना

डॉ. गोविंद के. नंदाणिया
श्री एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज,
सींगवड.

महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है । सरस्वती आराधक महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा एवं करुणा की मूर्ति के रुप में अंलकृत किया गया है । राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने महादेवी वर्मा को साक्षात् सरस्वती मानकर कहा है कि –

"सहज भिन्न दो महादेवियाँ एक रुप में मिली मुझे ।
बता बहिन ! "साहित्य शारदा" या "काव्यश्री" कहूँ तुझे ।"

महादेवी वर्मा "साहित्य शारदा" के साथ "काव्यश्री" भी है । उन्होंने गद्य, पद्य दोनों की रचना की है । जितनी कवयित्रि के रुप में ख्याति प्राप्त है, उतनी शायद गद्यकार के रूप में नहीं, लेकिन महादेवी वर्मा की गद्य–शैली साहित्य जगत में अत्यंत प्रभावी रही है । आज तक महादेवी वर्मा के कृतित्व का मूल्यांकन सामान्यतः उनकी काव्य निधि के निकर्ष पर किया जाता रहा है, जो बहुत हद तक उचित भी है । किन्तु मेरी दृष्टि में महादेवी वर्मा के साहित्य का पूर्ण मूल्यांकन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक उनके गद्यकार रूप का शत–प्रतिशत मूल्यांकन न हो । महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य उनके पद्य साहित्य के कुछ अभावात्मक पक्षों की आपूर्ति करता है । दूसरे शब्दों में, जो मनुष्य जीवन के विभिन्न पहलु पूर्ण रूपेण रूप में चित्रित हैं । उनका गद्य–साहित्य जीवन व्यापी वातावरण की विषमताओं का लेखा–जोखा है । ग्रामीण, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित एवं नारी उनके गद्य–साहित्य के प्राण है । महादेवी वर्मा ने इन लोगों को नजदीक से देखा है । उनका निकट से संपर्क किया है । डॉ. रणवीर रांग्रा से दिये गये साक्षात्कार में कहती है "गद्य में मेंने केवल उन व्यक्तियों को स्मरण किया है, जो मेरे जीवन के संपर्क में आये हैं और जिन्होंने किसी प्रकार मुझे प्रभावित किया है मैं उनका निकट से निरिक्षण किया है । उनके सुख–दुःख से तादात्म्य किया है और अपने हृदय का समस्त स्नेह उन्हें दिया है । वह कुछ–कौशल नहीं है, पर पूर्वनियोजित भी नहीं है । वे सहज ही मिल जाते हैं, मुझे जीवन के मार्ग में ।" इसी परंपरा में महादेवी वर्मा का नारी संबंधी साहित्य सृजन भी एक अनुष्ठान है, जो हजारों वर्षो से दलित, पीड़ित नारी मुक्ति की कामना करता है । आज नारी विमर्श हमारी केंद्रिय चिंता का मुददा बन गया है । लेकिन यह आज की बात नहीं है, नारी जीवन संबंधी प्रश्नों की चर्चा तो अनादिकाल से चली आ रही है । आधुनिक युग में पाश्चात्य नारीवादी चिन्तन से प्रभावित होते हुए महादेवी वर्मा ने "श्रृंखला की कडियाँ" रचना लिखी । यह कृति नारी अस्मिता के संदर्भ में अमूल्य नीधि है । सन–1930 से सन–1946 के बीच लिखे गये प्रस्तुत कृति के निबंध अत्यंत विलक्षण हैं । साहित्य सृजन के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि नारी जीवन की गतिविधियाँ पर इतना व्यवस्थित, इतना व्यापक, इतना सर्वोश्लेषी गहन पृथक्करण इसके पूर्व किसी ने नहीं किया । श्रृंखला की कड़ियों में कुल दस निबंध है । इसके अलावा एक और निंबंध नारी को लेकर उनके संस्कृति चिंतन में "भारतीय संस्कृति और नारी" नाम से प्राप्त होता है ।

आधुनिक नारी पराधीन नारी हैा महादेवी वर्मा ने अपने "श्रृंखला की कड़ियाँ" नामक निबंध में पराधीन नारी को नारी जीवन के लिए घोर अभिशाप माना है । उसने उन नारियों के प्रति विशेष संवेदना व्यक्त की है

जो सात्विक नारी जीवन से हटकर शरीर व्यवसाय करती है । महादेवी वर्मा मानती है कि नारी की गुलामी के कारणों में मुख्य कारण आर्थिक है । महादेवी के गद्य–साहित्य थोड़ा प्रेमचंद से भी प्रभावित रहा है । प्रेमचंद ने वेश्या जीवन पर जितनी आपति आज उठ रही है, उतनी नहीं उठाई । वह वेश्या जीवन को नारी समाज जीवन के लिए मान्य जीवन मानते थे । ऐसा भी नहीं है कि वेश्या स्त्री में कोमलता एवं सहानुभूति नहीं होती । अवश्य होती है । नारी में नारी सहज गुणों का कोष होता है । पुरुष प्रधान मानसिकता को लेकर जीनेवाले पुरुषों को सोचना होगा कि अपनी वासनाग्नि को बुझानेवाली स्त्रियों को आपने कभी बूंद दो बूंद आँसू पाने का अधिकारी भी नहीं समझा । नारी वस्तु नहीं मनुष्य है । पुरुष के समान उसे भी सुख–दुःख मान–अपमान सब का अनुभव होता है ।

"युद्ध और नारी" निबंध में महादेवी वर्मा ने युद्ध संबंधी पुरुषदृष्टि और आत्म समर्पिता नारी दृष्टि का विवेचन किया है । नारी युद्ध लिप्सु पुरुष को भी अपनी बंकिम भंगिमा से पराजित कर सकती है । नारी शांतिमय जीवन की कामना करती है । नारी के स्नेह, तपस्या, त्याग, साधना प्रेम और बलिदान आदि गुणों को वही व्यक्ति जान सकता है, जो कुछ समय के लिए स्त्री के साहचर्य में रहता है । फल ही तलवार के घाट उतरने और उतारनेवाला वीर के सामने तो स्त्री स्त्री है, सके लिए तो वह एक रूपमदिरा ही है, उसके पास दिव्य गुणों को आँकने का समय ही कहाँ है ? युद्ध काल में स्त्री पूर्ण रूप से स्त्री नहीं रह पाई । इस संदर्भ में महादेवी वर्मा कहती है कि – "कुरूक्षेत्र की रूधिर स्नाता द्रौपदी न महिमामयी जननी के रूप में हमारे सम्मुख आई और न गौरवान्वित पत्नी के रूप में प्रकट हुई । वैभव की अन्य सामग्रियों के समान वह शत्रु भय से भागते फिरनेवाले पाण्डव भाईयों में बाँये नई और युद्ध का निमित मात्र बनकर जीति रहने के लिए बाध्य की गई ।1 हम जानते है कि नारी आंदोलनों की जड़ पाश्चात्य देशों में है, लेकिन यह न भूलना चाहिए कि नारी आंदोलनों के पीछे नारी स्नेह, ममता एवं वात्सल्य की हत्या हो । पश्चिम के देशों में यही हुआ है । महादेवी वर्मा ने नारी युद्ध मानसिकता का विरोध करते हुए कहा है कि – "आधुनिक युद्धप्रिय राष्ट्रों की नारियों में यह संस्कार जन्म पा रहा है कि करुणा, दया, स्नेह आदि स्वभाव जन्मजात गुणों के संहार के लिए यदि पुरुष जैसा पाश्विक बल उनमें न आ सके तो उनकी जाति जीने योग्य नहीं । उसीसे वह मातृजाति अन्य संतानों का गला काटने के लिए अपनी तलवार में शान देने बैठी है ।महादेवी वर्मा का "नारीत्व का अभिशाप" निबंध कई दृष्टियों से चिंतन योग्य है । भारतीय संस्कृति में भोग के बजाय याग का महत्त्व है । हमारा पुराण एवं इतिहास दान, त्याग, समर्पण आदि से अलंकृत है । सीता की अग्नि परीक्षा नारी रूप का सात्विक एवं पवित्रता अनुष्ठान था, लेकिन पुरुषवादी पीड़ित मानसिकता ने उसे दुर्बलता समझा । पंस्तुत बात पर महादेवी रोष प्रकट करती हुई कहती है कि "पितृगृह में की वस्तु पतिगृह में उपेक्षित पादर्थ सी रहनेवाली नारी का जीवन अभिशाप ही तो है । चाहे वह स्वर्ण पिंजर की बंदिनी बनकर रहै, चाहे लौह पिंजर की । परंतु बंदिनी तो वह है ही और ऐसी कि जिसके निकट स्वतंत्रता का विचार तक पाप कहा जाएगा, माना जाएगा ।3 "आधुनिक नारी" निबंध में पश्चिम से एक ऐसी हवा चलती है कि उसमें नारी जीवन की बर्बादी–बर्बादी ही है । विश्व नारी जीवन को पश्चिमी नारीवादी आंदोलनों ने सकसरो है । भारतीय नारी को बचना असंभव है । लेकिन अब भी बची है, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति है । ऐसा भी नहीं है कि भारतीय नारी ने प्रयत्न नहीं किया, अवश्य किय है किन्तु वैसी सुविधाएँ न मिलने के कारण वह अभी तक पश्चिमी नारी को अपनी मार्गदर्शक ही माने बैठी है । "घर और बाहर" निबंध में गृहस्थ नारी जीवन दो रूपों का बताया गया है । एक निर्धन स्त्री का गृहजीवन एवं धनिक स्त्री का गृह जीवन । निर्धन को घर और बाहर दोनों जगहों पर काम करना होता है, वहां धनिक स्त्री को घर की चरार दिवारों में ही रहकर सुख भोग करता होता है । महादेवी वर्मा ने गृहस्थ नारियों को गृहस्थ के अतिरिक्त चिकित्सा कानून, शिक्षा अगर क्षेत्रों में भी काम करने के लिए कहा है । अतः महादेवी वर्मा ने नारी गुलामी के मूलभूत कारणों की खोज की है और गुलामी मुक्ति सिर्फ नारी शिक्षा से हो सकती है अतः श्रृंखला की कड़ियाँ निबंध संग्रह नारी मुक्ति का पवित्र अनुष्ठान है । अनुष्ठान की सार्थकता तब जिद हो सकती है । जब विश्वनारी मंच शैक्षिक उपलबिध्यों को जल्द–से–जल्द प्राप्त करे । नारी स्वातंत्र्य को प्राप्त की । अन्यथा, मानव समाज का उत्कर्ष स:भव नहीं होगा । इस दृष्टि से महाहेव वर्ता के उल्लेखित निबंध कई दृष्टिटों से महत्त्वपूर्ण रहे हैं । यही उनका दृढ़ मानना है ।वास्तव में स्त्री पवित्र आत्मा का प्रतीक है । सामाजिक व्यवस्था में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है । परंतु हिन्दु परिवार व्यवस्था में उसे दोय्यम दर्जे का स्थान है । प्रस्तुत बात का जिक्र महादेवी वर्मा ने "हिन्दु स्त्री का पत्नी भाव" निबंध में किया है । उन्होंने लिखा है कि प्राचीनता की दुहाई

झेलनेवाले कुलों में बिना देखे–सुने किस प्रकार उसका क्रय–विक्रय हो जाता है, वह तो लज्जा का विषय है ही, परंतु नवीनता के पूजकों में भी विवाह योग्य कन्या को बिकने के लिए खड़े हुए पशु की तरह देखना कुछ गर्व की वस्तु नहीं । जिस प्रकार भावी पति परिवार के व्यक्ति उसे चलाकर, हँसाकर, लिखा–पढ़ाकर देखने है तथा लौटकर उसकी लंबाई–चौड़ाई मोटापन, दुबलापन, नख–शिख आदि के विषय में अपनी धारणो बनाती है उसे सुनकर दास–प्रथा के समय बिकनेवाली दासियों की याद आये बिना नहीं रहती । महादेवी वर्मा ने जीवन का व्यवसाय निबंध में सौंदर्य विक्रय के चिंतन को और गहराई में जाकर झकझोरा है और कहा है कि नारी जीवन की नविनता स्वयं नारी के लिए अभिशाप है । नारी मनोरंजन का साधनमात्र है । अन्यों के आनंद हेतु उसे अपना नारीत्व खोना पड़ता है । अपना शीलत्व गँवाना होता है । नारी दो स्थितियों से पराजित है, एक अपने आपसे मुक्ति न पाने की ओर दूसरी आत्म निर्भर की । आत्मर्भिरता अर्थ व्यवस्था पर ही अधिक निर्भर है । "स्त्री के सर्व व्यवसाय का प्रश्न निबंध में मनोरंजन के वर्तमान सर्मप्रधान समाज में नारी के आर्थिक स्वातंत्र्य पर बल देने हो सकता है ।भारतीय समाज में पुरुष की तुलना में सर्वाधिक उपेक्षित नारी रही है । महादेवी वर्मा नारी सहज भावनाओं को भली–भाँति जाना पहचाना नारी जीवन की विडंबनाओं समस्याओं को झेला है । महादेवी में नारीपन का सच्चापन है । नारी जीवन की किसी भी समाज को वह निरंतन तेक कहती रहती है । नारी जीवन की सभी समस्या का जड़ स्त्री शिक्षा का वह स्त्री शिक्षा की पक्षधर थी । हमारी सतभाव निबंध में नारी की समस्याओं को बड़ी बखूबी चित्रित किया है । उल्लेखित निबंध नारी जागृति का आहवान करता है । उनमें केवल करख के स्वर, आँसू की बरसात और पीड़ा के उच्छवास ही नदी है । अपितु स्त्री मुक्ति के प्रयत्नो के स्वर है नवजागरण के संदेश है विचारों के मंथन है मारे चिन्तन की तार्किकता है । "श्रृंखला की कड़ियाँ" निबंध संग्रह वास्तव में नारी मुक्ति का आहवान हैं । नारी चेतना का ओजपूर्ण स्वर है । प्रस्तुत निबंधों में नारी मन की परतों को खोला है । नारी सहज जीवन की अनुभूति ने महादेवी को खलाया है । महोरम वर्मा के आँसू विश्व पीड़ित नली के आँसू है । एक–एक बूंद आँसू क्रांति की मशाल बने है । महादेवी वर्मा की नारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की गौरव प्रतिक है । वह कहती है ।

संदर्भ :

(1) "युद्ध और नारी" निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 18
(2) "भारतीय संस्कृति और नारी" निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 37
(3) "श्रृंखला की कड़ियाँ" निबंध संग्रह निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 38
(4) "श्रृंखला की कड़ियाँ" निबंध संग्रह निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 41
(5) "भारतीय संस्कृति और नारी" निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 35
(6) "भारतीय संस्कृति और नारी" निबंध : महादेवी वर्मा पृ. 45

डॉ. गोविंद के. नंदाणिया
श्री एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज, सींगवड.

LBP PUBLICATION